तत्रयोगांगेषुप्राणायामउक्तस्तेनैवततःप्राचीनानियमनियमासनान्याक्षिप्तानि अथपत्याहारमाह इंद्रियाणीति इंद्रियार्थैभ्यःशब्दादिभ्यः मनसानिवर्वेतिमुख्यंप्रत्याहारंत्रिरुनतंप्राप्यसमंशरीरंढदींद्रियाणि मनसासन्तिरुध्येतिश्रुत्युक्तमुक्काहठसाध्यंप्रत्याहारादिकमाह दशेति दशयुक्ताभिद्वीदशभिद्वीविशतिसंख्याभिःसंचोदनाभिश्वित्ताश्वस्यप्रतोदस्थानीयाभिःप्रेरणाभिर्मतिमानात्मानंजीवंचतुर्विशादज्ञानात्प कृतिसंज्ञात्परंपंचिवशंप्रतिगंतुंचोदयेखेरयेत् तत्राष्टादशसुस्थानेषुवायोः प्रत्याहरणंयाज्ञवल्क्येनोक्तं अष्टादशसुयद्वायोर्भरस्थानेषुधारणं स्थानात्स्थानात्समाकृष्यप्रत्याहारोनिगद्यतङ्खुपक्रम्यमर्मस्थानानिते 🕌 🎚 ॥२०६॥ *
| पामंतरंचो काह संपूर्यकुं भवद्वायुमंगुष्ठान्मूर्धिमध्यतः धारयत्यनिलंबुतध्याप्राणायामः प्रचोदितः व्योमरंध्रात्समारूष्यलाठो देधारयेतुनः ललाटाद्वायुमारूष्यभूवोर्मध्येनिरोधयेत् भूमध्याद्वायुमारूष्यनेत्र
| ** स्थानेनिरोधयेत् नेत्राद्वायुंसमारूष्यनासामूलेनिरोधयेत् नासामूलात्तुजिव्हायामूलेप्राणंनिरोधयेत् जिव्हामूलात्कंठकूपेततोवायुंनिरोधयेत् कंठकूपात्तुरून्मध्योद्धन्मध्यान्ताभिमध्यमे नाभिमध्यात्पुनर्मेद्रे
| ** |
| ** |
| ** |
| ** |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
| * |
|

इंद्रिणींद्रियार्थेभ्योनिवर्त्यमनसाश्चिः॥दशद्वादशभिर्वापिचतुर्विशात्परंततः॥१०॥संचोदनाभिर्मतिमानात्मानंचोदयेदथ॥तिष्ठंतमजरंतंतुयत्तदुक्तंमनी षिभिः॥ १ १ ॥ तैश्रात्मासततंज्ञेयइत्येवमन्शुश्रुम ॥ वतंत्यहीनमनसोनान्यथेतिविनिश्रयः ॥ १२ ॥ विमुक्तःसर्वसंगेभ्योलघ्वाहारोजितेद्रियः ॥ पूर्वरात्रेप ररात्रेधारयीतमनोत्मनि॥ १३॥ स्थिरीकृत्येद्रियग्रामंमन्सामिथिलेश्वर्॥ मनोबुद्धास्थिरंकृत्वापाषाणइवनिश्वलः॥ १४॥ स्थाणुवचाप्यकंपःस्याद्गिरि वचापिनिश्रतः॥बुद्याविधिविधानज्ञास्तदायुक्तंप्रचक्षते॥ १५॥ नश्णोतिनचाँघातिनरस्यतिनपश्यति॥ नचस्परीविजानातिनसँकल्पयतेमनः॥ १६॥

योस्तं निरोधयेत् स्थानात्स्थानंसमारुष्ययस्त्रेवंधारयेद्धिया सर्वपापविशुद्धात्माजीवेदाचंद्रतारकं एतत्तुयोगसित्ध्यर्थमगस्येनापिकीर्तितं प्रत्याहारेषुसर्वेषुप्रशस्त्रमितियोगिभिरिति एवमष्टादशप्रत्याहार चोदनाः धारणध्यानसमाधिसंज्ञास्तिस्रः ततःसत्वपुरुषान्यताख्यातिसंज्ञाद्वाविशीचोदना ततोपिसंप्रेरितोजीवोनदीसमुद्रन्यायेननिर्विशेषचिन्मात्रतांप्रतिपद्यते सार्धः॥१०॥ तंयोगिनंतिष्ठंतंजीवन्मुक्तंअजरं 📲 जराहीनंमनीषिभिर्योगिभिर्यत्यस्मात्तच्छब्देनोक्तं तदितिवाएतस्यमहतोभूतस्यनामभवतीतिश्रुतेर्ब्रह्मत्वेनिर्दिष्टमतस्तद्भावापत्तयेआत्मानंप्रत्यंचंनरःचतुर्विशात्परंप्रतिगंतुंचोदयेदितिपूर्वेणसंबंधः ॥ ११ ॥ ॥ १६ ॥ तद्दितिपूर्वेणसंबंधः ॥ ११ ॥ क्षेत्रींविशत्याप्रेरणेः अहीनंकामादिभिरनास्कंदितंमनोयस्यतस्यैवव्रतयोगाख्यंयोग्यमितिशेषः ॥ १२ ॥ संगेभ्यःअहंकर्तृत्वाद्यभिमानेभ्यःह्मयादिभ्योवा ॥ १३ ॥ पाषाणस्थाणुगिरिद्दष्टांतानिश्वलत्वोत्क । १८ ॥ विधेःशास्त्रस्यविधानंतात्पर्यतज्ञानंतोविधिविधानज्ञाः बुर्ध्यास्वानुभवेनैव तदाआत्मप्राप्त्यवस्थायां युक्तयोगिनंप्रचक्षते नश्रणोतीत्यादिनातदनुभवंवर्णयंतीत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥

शांमो